2. ओकार बहुला : ***(1) ब्रजभाषा :*** शौरसेनी प्राकृत से विकसित, लगभग 27 हजार वर्गमील में विस्तृत, पश्चिमी हिन्दी की ओकार बहुला उपवर्ग की प्रतिनिधि बोली ब्रज, मथुरा, आगरा, भरतपुर, धौलपुर, करौली, ग्वालियर के पश्चिमी हिस्से, जयपुर के पूर्वी भाग, गुड़गाँव के पूर्वी हिस्से, बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी तथा गंगापार के क्षेत्र बदायूँ, बरेली, नैनीताल की तराई में फैली है। अपने वर्ग की प्रतिनिधि बोली तथा एक लम्बे काल से साहित्य में प्रयुक्त ब्रज आज बुंदेली, कन्नौजी, राजस्थानी, कुमायूँनी, गढ़वाली को समझने का माध्यम है। नैनीताल की भुक्सा; एटा, बदायूँ, मैनपुरी तथा बरेली की अंतर्वेदी; धौलपुर एवं पूर्वी जयपुरी की डाँगी, करौली की जादोबारी, इसकी उपबोलियाँ हैं। मथुरा, अलीगढ़ और आगरा के पूर्वी हिस्से की बोली आदर्श ब्रजभाषा के रूप में मान्य है। बंगला के कृत्रिम रूप 'ब्रजबुलि' में भी ब्रजभाषा का प्रभाव लक्षित होता है। 'पिंगल' ब्रजभाषा का एक अन्य नाम है।

ब्रजभाषा में प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। आदिकाल में यह जहाँ अपभ्रंश और अवहट्ठ को प्रभावित करती है, वहीं मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में यह साहित्य की भाषा बन बैठी। परिनिष्ठित हिन्दी के गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित होने के कारण यह 'बोली' के बदले 'भाषा' की संज्ञा से विभूषित हुई। समूचा कृष्णभक्ति साहित्य, रीतिकालीन साहित्य इसी भाषा में लिखा गया। आधुनिक काल के प्रणेता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने भी प्रारम्भ में इसी भाषा का प्रयोग किया।

विशेषताएँ

ब्रजभाषा में प्राप्त स्वर ध्वनियों के तीन वर्ग हो सकते हैं :

अति ह्रस्व—अँ, इँ, उँ

ह्रस्व—अ, इ, उ, एँ, ओं

दीर्घ—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

इ, उ के जंपित या फुसफुसाहट वाले रूप के अतिरिक्त सभी स्वर अनुनासिक रूप में भी आते हैं।

ब्रजभाषा में प्राप्त व्यंजन हैं—क्, ख्, ग्, घ्, च्, छ्, ज्, झ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, त्, थ्, द्, ध्, प्, फ्, ब्, भ्, ङ्, ञ्, ण्, म्, ढ्, म्ह्, न्ह्, ड्, ढ्, र्, र्ह्, ल्, ल्ह्, व्, य्, स्, ह्। इनमें से ञ् एवं ण् के शुद्ध उच्चारण के लिए विवाद है। क्योंकि ञ् का उच्चारण यूँ तथा ण् का उच्चारण ड़ूँ की तरह होता है।

ब्रजभाषा में प्राप्त कुछ ध्वनियों के विशिष्ट परिवर्तन उल्लेखनीय हैं :

हिन्दी के ऐं, ओ स्वर ब्रज में ऐं, औ में परिवर्तित हो जाते हैं—करे > करैं, ने > नैं, उधो > उधौ।

हिन्दी के आकारान्त शब्द ओकारान्त हो जाते हैं—बसेरा > बसेरो, झगड़ा > झगड़ो।

क > च्। क्यों > च्यों, चौं।

ड़ > र् : घोड़ा > घोरा, थोड़ा > थोरा, साड़ी > सारी, कीड़ > कीरी।

न् > ल् : नम्बरदार > लम्बरदार।

र् > ल् : रज्जु > लेजु, जरूरत > जरूलत।

ल् > न् : बाल्टी > बान्टी, जल्दी > जन्दी।

ल् > र् : बादल > बादर, ताला > तारा, भोली > भोरी।

ह् का लोप—बहु > बऊ, बारह > बारा।

समीकरण—बादशाह > बास्सा, मरता > मत्ता।

महाप्राणीकरण : गाड़ी > गाढ़ी।

विपर्यय—इन्साफ़ > निसाफ़, गरुड़ > गुड़र।

अल्पप्राणीकरण : भाभी > भाँवी, ब्राह्मण > बाभन।

संज्ञा : ब्रजभाषा में प्राप्त संज्ञा शब्द के विविध रूप निम्नांकित हैं :

	एकवचन	**बहुवचन**
अविकारी	घरु, लड़िका, डाण्ड़ो	घर, लड़िका, डाण्ड़े,
विकारी	घर, लड़िका, डांड़े	डाँड़ौं, डांड़न, डाँड़नि, घरौं, घरन्, घन्नि

परसर्ग

कर्ता	न्, ने, नें, नै, नैं।
कर्म-सम्प्रदान	ए, ऐ, इ, कु, कू, कुँ, कूँ, कें, को, कों, कौ, कौं।
करण-अपादान	ते, तें, तैं, से, सें, सू, सूँ, सैं, सों, सौं।
सम्बन्ध	कि, की (स्त्री.), के, को, कौ।

अधिकरण प, पे, पै, में, मैं, महँ, माँहि, माहीं, महि।

विशेषण–ब्रजभाषा के आकारान्त विशेषण पद औकारान्त हो जाते हैं–बड़ा > बड़ौ, छोटा > छोटौ, कारा > कारौ। **संख्यावाची विशेषण** के रूप हैं–एकु, द्वै, दौं, तीनि, ग्यारा, बारा, अठारा, तीस, इक्यामन, कड़ोर, पँहलौं, दूजौं, दूसरौं, पाँचमों, पाँचऔं, छैमी, सातमी, नमऔं ,दोऊ (दोनों), तीन्यौं, चार्‌यौं।

सर्वनाम-ब्रजभाषा में प्राप्त सर्वनाम के विविध रूप निम्नांकित हैं :

पुरुषवाचक : उत्तम पुरुष–मैं

अविकारी	हौं, हों, हूँ, मैं, मैं	हम्
तिर्यक्	मुज, मुहि, मो, मोहि	हम, हमन, हमनि, हमौ हमारे, हमार्‌यो।
सम्बन्ध	मेर्‌यौ, मेरौ, मेरो, मेरी, मेरे	हमैं, हमहिं, हमनकौ, हमकौ
कर्म-संप्रदान	मुहि, मोए, मोइ, मोय मोहि, मो, मोकौ, मुजकों	हमनकौं, हमनिकों
करण-अपादान	मोते, मोसों, मोहितें	हमतैं, हमनसौं, हमसौं
अधिकरण	परि, पै, मोपरि, मोपै, मोमैं	हम परि, हमन पै, हमनि मैं, हमीं पै

पुरुषवाचक : मध्यम पुरुष–तू

अविकारी	तू, तैं, तै	तुम
विकारी	तुज, तुहि, तो, तोहि	तुम्हौं, तुम
सम्बन्ध	तेरौ, तेर्‌यौ	तुम्हार्‌यौ, तुम्हारौं, तिहारौ, तिहार्‌यौ
कर्म-सम्प्रदान	तुहि, तो, तोइ, तोए तोय, तोहि	तुम्हैं
करण-अपादान	तोहितें, तोसों	तुमन सों, तुमतैं, तुमसौं
अधिकरण	परि, पै, तो पै, तोहि मैं	तुमौ पै, तुमन पै, तुम्हौं परि

पुरुषवाचक : अन्य पुरुष (निश्चयवाचक-दूरवर्ती)–वह

अविकारी	वह, वुह, वो	वै, वे
विकारी	वा, विस, वाहि	उन, बिन, उनि, उन्हौं
सम्बन्ध	विसकी, विसके, विसका	विनकी, विनके, विनका
कर्म-सम्प्रदान	विसे, वाए, वाय, वाहि, वाकौ, विसकौ	विन्हैं, उन्हैं, उनै, बिनैं, उन्हें, उनको, विनकौ
करण-अपादान	विसतें, वासें, वासों,	उनतें, उनसों
अधिकरण	विसपरि, वापै, वामैं	उनमैं, विन पै, ग्वनुवरि

निश्चयवाचक : निकटवर्ती–यह

अविकारी	इ, ई, जि, जिअ, जे, जु, जै, गि, गिअ, यह, यिह, यु, यो,	ए, गे, जे, ये, यै

	यि, या, जा, गि, गु (स्त्री)	
विकारी	या, इस, याहि, ग्या, जा	इन, इनि, इन्हौं, गिन, जिन
सम्बन्ध	याकी, याके, याका, जाकी, जाके, जाका.	इनकी, इनके, इनको
कर्म-सप्रदान	इसे, इस, याय, याहि, याए	इहैं, इन्हैं, इनै, जिन्हैं, जिन्है

सम्बन्ध वाचक–जो

अविकारी	जो, जौन, जौ	जौ, जो, जे
विकारी	जाहि, जिस जा	जिन्हौं, जिन्, जिनि
सम्बन्ध	जासु, जाके, जाकी, जाको, जाका	जिनकी, जिनके, जिनका, जिनको
कर्म-सम्प्रदान	जिसे, जिहि, जाय, जिन्हें	जिन्हैं, जिनै

पारस्परिक सम्बन्धवाचक–तो

अविकारी	सो, तौन, सौ	ते, सौ
विकारी	तिस ता, ताहि	तिन, तिनि, तिन्हौं
सम्बन्ध	तासु, ताकी, ताके, ताको, ताका	तिनका, तिनकी, तिनके, तिनको,
कर्म-सम्प्रदान	तिसे, ताए, ताय, ताहि	तिन्हैं, तिन्है, तिनैं

प्रश्नवाचक–कौन, क्या

अविकारी	कौन, कौ, को, का कहा	कौ को, कौन, का कहा
विकारी	का, काहि, किस, काए, काहे	किन्हौं, किन्, किनि, कौन का
सम्बन्ध	काको, काके, काकी, कासु कौनकी	किनका, किनकी, किनके, किनको
कर्म-सम्प्रदान	किसे, काए, कौनैं, काहि, काय	किनैं, कौनैं, किन्हैं

निजवाचक–आप

अविकारी	आपु, आप	आपु, आप
विकारी	आपुनैं, अपुनैं	आपुनैं, अपुनैं
सम्बन्ध	अपनी, अपने, अपनो, आपनो, आपनी, आपने	आपनो, आपनी, आपने, अपनो, अपने, अपनी

क्रिया-रूप

सहायक क्रिया–वर्तमान काल

उत्तम पुरुष	:	हौं, औं, हो, आँऊँ हूँ	हैं, ऐं
मध्यम पुरुष	:	है ऐ	हौ, हो, औ, ओ
अन्य पुरुष	:	है ए	हैं, ऐं

सहायक क्रिया–भूतकाल

एकवचन–उत्तम पुरुष : हौ हो, ही, ओ, औ, हुतो; मध्यम पुरुष : हुतौ, हतौ, हतो,

अतौ; **अन्य पुरुष** : भी, भो, भौ, भयो, भयौ, रह्यो, रह्यौ; **बहुवचन–उत्तम पुरुष**–हीं, हौं (स्त्री.), ए, हे; **मध्यम पुरुष** : उते, हुते, हुतै, उतै; **अन्य पुरुष** : हतुए, हते, भी, रहे, भये।

सहायक क्रिया : भविष्यत्

उत्तम पुरुष	:	औंगो, हुँगो, हाँहौं, हौंगो, हौऊँगी	हुँगो, होंगे, ह्वैहैं, होंयेंगे, हैंगे,
मध्यम पुरुष	:	ह्वैहैं, होइहैं, होयगो, हैगो	होयगे, हैंगे, होउगे, ह्वैहो
अन्य पुरुष	:	हैगो, होगो, ह्वैहैं, होइहैं, होयगो	हुँगे, होंयंगे, ह्वैहैं, होंगे, होइहैं, होहिंगे

पूर्वकालिक क्रिया : लिखि कै (लिखकर), देखिकै (देखकर), जाइकै (जाकर), आइकै (आकर); **आज्ञार्थ क्रिया**–मारौ, मार, मारहि, मारि, मारिजै, मारियै, मारियो; **प्रेरणार्थक क्रिया**–चलावनौं, चलवावनौ, चलवानौं, पुजावै, पुजवै, बुलवयौ, बूलायौ; **क्रियार्थक संज्ञा**–बैठिबो, चलिबो, होनो, करिबो के ये रूप प्राप्त होते हैं।

संभावनार्थ वर्तमान

उत्तम पुरुष	:	मारौं, मारूँ	मारैं, मारहिं
मध्यम पुरुष	:	मारै, मारहि	मारहु, मारौ
अन्य पुरुष	:	मारहि, मारै	मारैं, मारहिं

संभावनार्थ भूतकाल–एकवचन में मारहुतौ, भयौ, रह्यौ, औ, हौ, ह्तौ, हतो तथा बहुवचन में उते, हुते, रहे, भये, एहै रूप प्राप्त हैं।

अव्यय(क्रिया-विशेषण)

यह इस प्रकार हैं–**कालवाचक**–आज, आजु, काल, कल, काल्लि, परौं, परसौं, तरौं, तरसों, कबै, कब, जबै, जब, तबै, तब, अबै, अब। **स्थानवाचक**–वाँ, हुआँ, हुअन, उतै, बितै, हुआन, न्याँ, भ्वाँ, हतै, हियन, ह्याँ, हियाँ, इहाँ, याँ, बितै, माँ, बाँ, माँ, ह्वाँ, म्हाँ, ता, तितै, तहाँ, जहाँ, जाँ, कितते, कहाँ, काँ, इत, उत, तित, कित। **परिमाणवाचक**–उतनौ, जितनौ, तितनौं, कितनों, इतनौ, जितने, उतने, कितने, तितने, तित्तो, जित्तो, उत्तो ! **स्वीकारात्मक**–हाँ, हौं, हौहीं। **निषेधात्मक**–नायँ, नाहि, नाहीं, ना, न। **रीतिवाचक**–तैसो, कैसो, जैसो, वैसो, ऐसो।